Population: Growth, density and distribution (INDIA)

मानव संसाधन की उत्कृष्ट क्षमता ही विकास के द्वार की प्रथम पूंजी है। विश्व में सभी भूगोलवेत्ताओं अर्थशास्त्री एवं समाज विज्ञानवेत्ता मानव को उत्कृष्ट संसाधन स्वीकारते है। इस आधार पर मानव शक्ति को शक्ति संसाधन के रूप में स्वीकारा जाता है। किसी देश की औद्योगिक एवं व्यापारिक उन्नति तथा सर्वांगीण विकास वहाँ के जनसंख्या की कार्य क्षमता पर निर्भर करती है।

भारत का क्षेत्रफल (32.8 लाख वर्ग किमी) विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% है जहाँ विश्व की 16% जनसंख्या निवास करती है।

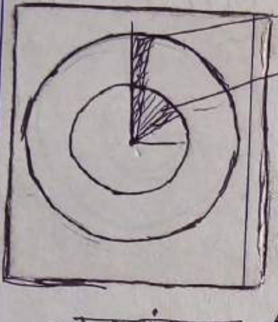

- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% = भारत का क्षेत्रफल
- विश्व के कुल जनसंख्या का 16% = भारत की जनसंख्या
- उ० + द० अमेरिका के जनसंख्या = ,,
- अफ्रिका की ,, × 2 = ,,
- आस्ट्रेलिया की ,, × 2.5 = ,,
- रूस की ,, × 2.5 = ,,
- ब्रिटेन की ,, × 7 = ,,

जनसंख्या की दृष्टिकोण से विश्व में भारत का स्थान दूसरा एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां है। 2001 के जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 102.7 करोड़ थी। विश्व की जनसंख्या की दृष्टि से चीन का स्थान सर्वोत्तम है।

जनसंख्या वृद्धि : — मोरलैण्ड के अनुसार 16वीं शताब्दी में भारत की जनसंख्या 10 करोड़ थी और जनसंख्या वृद्धि की गति बहुत मंद थी लेकिन 20वी शताब्दी के उत्तरार्ध में अर्थात स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। जनसंख्या वृद्धि की स्थिति निम्नलिखित है —

शतकीय वृद्धि

ई.	जनसंख्या (करोड़ो में)
1600	10 करोड़
1700	12 ,,
1800	19 ,,
1900	23 ,,
2000	102 ,,
2100	

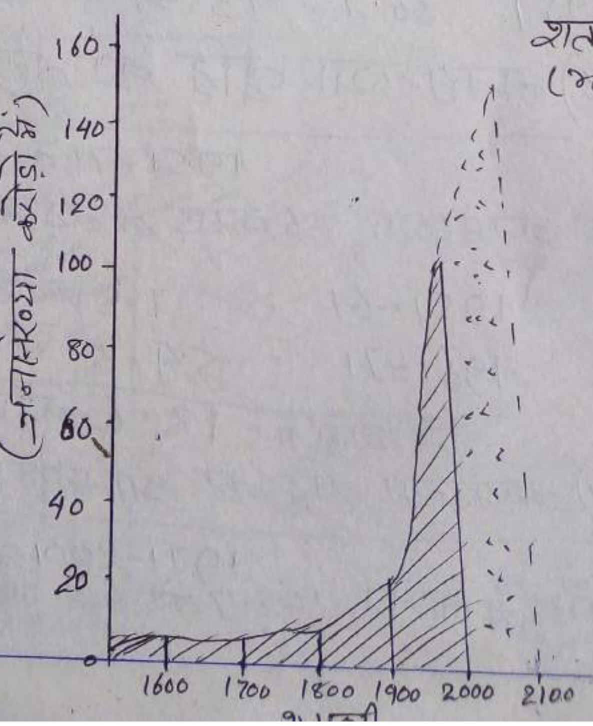

भारत की जनसंख्या वृद्धि गति संबंधी सांख्यिकी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रारंभ जनसंख्या की गति धीमी थी बाद में चलकर यह तीव्र हो गई। 1872 में भारत में सबसे पहले जनगणना की गई और 1881 में दूसरी। इसके पश्चात् प्रति 10 वर्ष पर जनगणना की जाती है। जनगणना के रिपोर्ट के अध्ययन के आधार पर भारत की जनसंख्या वृद्धि चार युगों में बांटा जा सकता है।

जनसंख्या वृद्धि का — 1) धीमा युग (1891-1901)
2) मध्यम युग (1921-51)
3) तीव्र युग (1951-71)
4) अति तीव्र युग (1971-2001)

1) जनसंख्या वृद्धि का धीमा युग (1891-1901) :—

ई.	जनसंख्या करोड़ में	वृद्धि दर
1901	23.6	—
1911	25.2	5.75
1921	25.2	(-0.31)

कारण :— 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में विभिन्न बीमारियों के फैलने एवं सुखाड़ की स्थिति के कारण जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी रही।

2) जनसंख्या वृद्धि का मध्यम युग (1921-51) :—

ई०	जनसंख्या करोड़ में	वृद्धि
1931	27.8	11.11
1941	31.8	12.22
1951	36.1	13.31

कारण : इसके मध्य राजनीतिक अस्थिरता के साथ-साथ औद्योगिक और व्यापारिक कार्यों में विकास न होने के कारण जनसंख्या वृद्धि दर मध्यम रही।

3) जनसंख्या वृद्धि का तीव्र युग (1951-71) :—

1951-71 के मध्य अर्थात इन बीस वर्षों में भारत की जनसंख्या 36 करोड़ से बढ़कर 54.8 करोड़ हो गई।

1951-61 ... 7.8 करोड़
1961-71 - 54.8 "

दोनों दशकों में 18.6 करोड़ की वृद्धि अंकित की गई

4) जनसंख्या वृद्धि का अतितीव्र युग (1971-2001) :—

1971-2001 अर्थात् 30 वर्षों में देश की जनसंख्या 54 करोड़ से बढ़कर 102.7 करोड़ हो गई जो 1971 की जनसंख्या के लगभग दुगनी है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या (करोड़ों में)	वृद्धि दर %
1901	23.6	—
1911	25.6	5.75
1921	25.00	-0.31
1931	27.8	11.11
1941	32.8	12.22
1951	36.1	13.31
1961	43.1	21.51
1971	54.8	24.7
1981	63.8	25.00
1991	84.6	25.89
2001	102.7	27.34

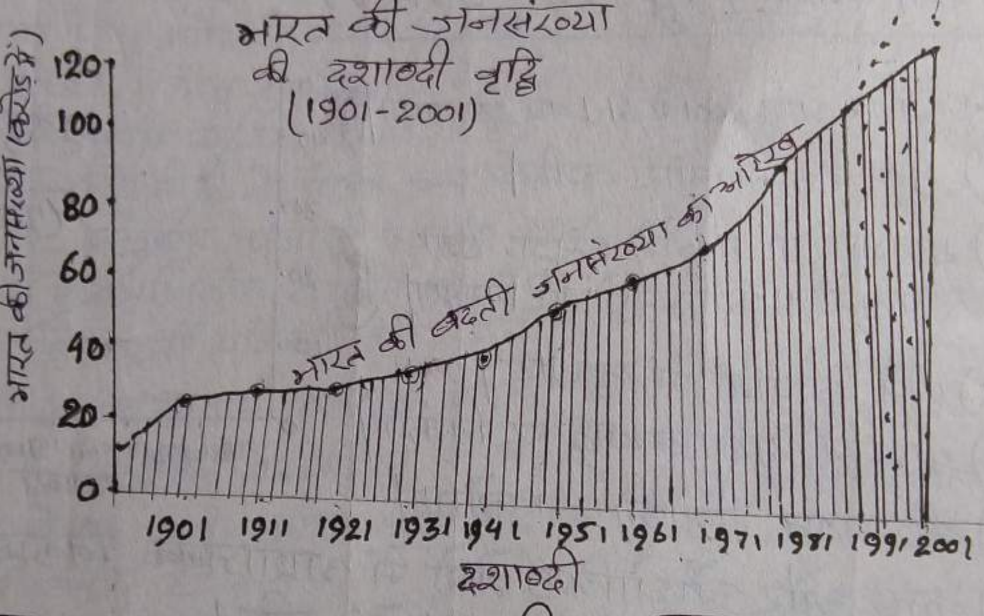

राज्यानुसार जनसंख्या वृद्धि :—

1991-2001 में जनसंख्या वृद्धि :—

इस दशाब्दी में औसत वृद्धि-दर 21.34% अंकित की गयी। सबसे अधिक वृद्धि दर नागालैण्ड राज्य में 64.41% इस दशाब्दी में रही। केन्द्र शासित राज्यों में दादरा एवं नगर हवेली में 59.20% वृद्धि ने सबसे अधिक वृद्धि के रूप में अपनी पहचान बनायी। सबसे वृद्धि 9.4% केरल राज्य में रही। औसत से अधिक वृद्धि रखने वाले राज्यों की संख्या 15 है। जनसंख्या की दशाब्दी वृद्धि की दर के आधार पर राज्यों को चार वर्गों में रखा है।

1) कम जनसंख्या वाले राज्य (<18%):– गोआ (14.89) केरल कर्नाटक, W.B, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश उडीसा	2) मध्यम वृद्धि वाले राज्ये (18–24%):— पंजाब, असम, अरुंचल छतीसगढ़,	(3) उच्च वृद्धि वाले राज्य (24–27%) • UP (25-08) • MP (24.34) • अरुणाचल प्रदेश (26.21)	4) अति उच्च वृद्धि वाले राज्य (<27) • हरियाणा (28.2%) • राजस्थान (28.8%) • J & K (29.4%) • बिहार • सिक्किम • मेघालय • मिजोरम • नागालैण्ड

• अतिशय वृद्धि के कारण :—

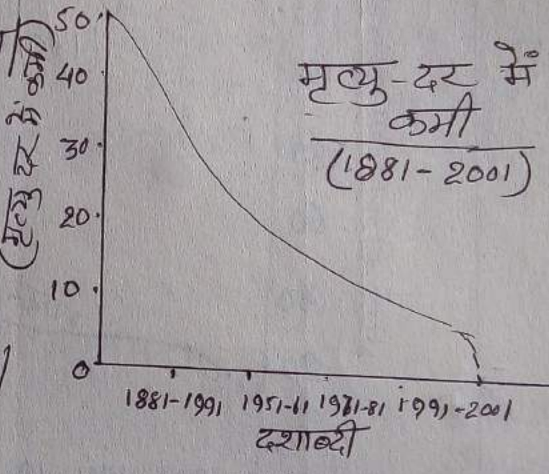

•) औसत आयु 2001 में 61.1 वर्ष हो गया।
•) मृत्यु-दर में घोर कमी।
•) महामारियों में जैसे प्लेग, हैजा, इंफलुएंजा आदि रोगों पर नियंत्रण।
•) पीने के पानी में सुधार।
•) अकाल, सुखा व बाढ़ पर नियंत्रण।
•) कीटनाशक दवाओं का प्रयोग।
•) कृषि और औधोगिक क्षेत्रों में आशाजनक विकास के फलस्वरुप जीविकोपार्जन के साधनों में वृद्धि।
•) यातायात के साधनों व सिंचाई के सुविधाओं का विस्तार।

⇒ भारत में जनसंख्या का वितरण एंव घनत्व :—

भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य U.P है। अकेले U.P पाकिस्तान के जनसंख्या के समान तथा जापान व बंगला देश से अधिक है। देश में U.P के बाद महाराष्ट्र, बिहार, W.B, एंव आँध्र प्रदेश का स्थान आता है केरल जो देश में घनत्व की दृष्टि से दूसरा स्थान रखता है। कुल जनसंख्या की दृष्टि से 13वां स्थान रखता है। देश के सभी केन्द्रशासित प्रदेश, जनसंख्या की दृष्टि से 15वाँ स्थान रखने वाले हरियाणा से भी कम जनसंख्या रखते है। अकेला हरियाणा 2.1 करोड़ जनसंख्या के साथ विश्व के लगभग 2/3 देशों से अधिक जनसंख्या रखता है। इस प्रकार देशों में जनसंख्या के वितरण के लिए

इन राज्यों तीन वर्गों में रखा जा सकता है —
1) उच्च घनत्व वाले राज्य।
2) मध्यम घनत्व वाले राज्य।
3) न्यूनतम घनत्व वाले राज्य।

1) <u>उच्च घनत्व वाले क्षेत्र :—</u>

इसमें वे राज्य शामिल हैं जहाँ 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक घनत्व पाया जाता है। इस क्षेत्र में जहाँ भूमि की उत्पादकता शक्ति अधिक है जनसंख्या घनत्व अधिक मिलता है, क्योंकि देश की 3/4 जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर करती है। उपजाऊ कांप मिट्टी के मैदान उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, पश्चिम बंगाल राज्यों के अधिकांश स्थानों पर पाये जाते है। पूर्वी, पश्चिमी तटीय मैदान भी इस प्रकार की उपजाऊ कांप मिट्टी रखते है। इन उपजाऊ मैदान पर भी घनत्व सबसे अधिक पाया जाता है। विशाल मैदान देश की 45.8% जनसंख्या रखती है जबकि वह केवल 19% भूभाग घेरे हुए है। इस मैदान में अधिक घनत्व के कई कारण है —

- नदियां सदा पानी से भरी रहने वाली है जो सिंचाई के लिए काफी मात्रा में पानी प्रदान करने में समर्थ है।
- भूमि उपजाऊ कांप से निर्मित है, भूमि समतल, अतः खेती में सुविधाएँ
- खाद्यानों का भारी मात्रा में उत्पादन।
- यहाँ परिवहन आयोग व व्यापार की पर्याप्त सुविधा।
- वर्षा पर्याप्त है और इसकी कमी सिंचाई से पूरी कर जाती है।
- यहाँ की जलवायु वर्ष भर खाद्यान उत्पादन के अनुकूल।

मध्यम घनत्व के क्षेत्र (Areas of Medium density)

इसमें वे राज्य शामिल है जहाँ पर घनत्व 251-300 व्यक्ति के बीच पाया जाता है। आंध्रप्रदेश (275) असम (34 कर्नाटक (275) गुजरात (258), महाराष्ट्र 314 उड़ीसा (365) मध्यम घ वाले राज्य है आमतौर से देश वह भू-भाग जहाँ मानव

निवास की परिस्थितियां उपयुक्त क्षेत्रों की अपेक्षा कम अनुकूल है वहाँ घनत्व मध्यम पाया जाता है। प्रायद्वीपीय पठार अधिकांश भाग इसी के अंतर्गत आता है। कुछ अपवादों को छोड़कर पश्चिम में अरावली पहाड़ियों व सह्याद्री, पूर्व में पूर्वी घाट उत्तर में यमुना व बुन्देलखण्ड पठार के बीच मध्यम घनत्व वाला क्षेत्र है। यहाँ पर मध्यम घनत्व पाये जाने के कारण निम्न है ——

- असमतल धरातल का होना।
- कम उपजाऊ मिट्टिया - लाल, पीली, व लेटेराइट का पाया जाना।
- नदियों का वर्ष भर जलप्लावित न रहना।
- सिंचाई के लिए पानी की कम उपलब्धि।
- यातायात साधनों का जाल अधिक बिखरा होना
- वर्षा की मात्रा साधारण होना।

III कम घनत्व वाले क्षेत्र (Areas of Low density)

इसमें वे राज्य शामिल है जहाँ घनत्व 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से कम पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, मणिपुर, ~~मेघालय~~ मेघालय, नागालैण्ड, राजस्थान, सिक्किम, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ जम्मु - कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश आदि। इस श्रेणी में आते है। इन राज्यों का अधिकांश भाग निम्न भौगोलिक विशेषताओं के कारण घनत्व कम रखता है ——

- धरातल पहाड़ी व पठारी
- वनों की अधिकता
- कृषि क्षेत्रों का अभाव
- जलवायु अस्वास्थ्यकर
- सिचाई व पानी के पानी की सुविधाओं का अभाव
- मरुस्थली व अन्य अनुपजाऊ मिट्टी।
- वर्षा की मात्रा का कुछ क्षेत्रो में अभाव।

— ' 0 ' —